गलतफहमी है आईआईटी में ज्यादा पढ़ना होता है

इंदौर। अभिलाषा सक्सेना

प्रेसीडेंट गोल्ड मेडल के लिए चयनित वेदांत अग्रवाल से खास चर्चा

मैं कभी समय देखकर नहीं पढ़ता था। बस एक चीज दिमाग में थी। जो टॉपिक पढ़ रहा हूं उसको इतना गहराई में पढ़ना है कि कोई कंफ्यूजन न रह जाए। कोर्स बुक्स के अलावा उससे संबंधित रेफरेंस बुक्स पढ़ता था, ताकि दूसरों से अलग कर सकूं। लोगों को गलतफहमी है कि आईआईटी में बहुत ज्यादा पढ़ना होता है। सप्ताह में औसतन 30 घंटे की पढ़ाई काफ़ी है। बस कंसिस्टेंसी जरूरी है। ये विचार हैं आईआईटी के छठे कंवोकेशन में प्रेसीडेंट गोल्ड मेडल पाने वाले वेदांत अग्रवाल के। मूलत: सूरत के रहने वाले वेदांत फिलहाल यूएसए के अरबाना यूआईयूसी से एमएस कर रहे हैं।

वेदांत कहते हैं मुझे बचपन से ही पढ़ाई में इंटेरस्ट था, लेकिन टॉप करने का कोई क्रेज नहीं था। पेरेंट्स ने कभी मार्क्स को लेकर कोई दबाव नहीं बनाया। लेकिन जब उन्हें पता चला कि गोल्ड मेडल मिल रहा है तो मुझसे ज्यादा खुशी उन्हें हो रही है। वेदांत के पिता चंद्रप्रकाश अग्रवाल बिजनेसमैन हैं, लेकिन वेदांत फिलहाल बिजनेस की जगह इंडस्ट्री में काम करके अनुभव लेना चाहते हैं। फिलहाल वे मशीन लर्निंग के क्षेत्र में रिसर्च कर रहे हैं।

भारत और अमेरिका में हायर एजुकेशन और इंस्टीट्यूट में अंतर को लेकर वेदांत कहते हैं वहां ऑप्शंस यहां से बहुत ज्यादा हैं। यहां अगर आपने कंप्यूटर साइंस ले लिया तो आपको उसमें ही आगे करना होगा जबकि वहां स्ट्रीम ट्रांसफर काफी आसान है। करिकुलम में भी चयन करने की फ्रीडम बहुत ज्यादा है। साथ ही वहां आप जो भी काम करते हो उसका रिकगनीशन होता है। हालांकि अब भारत में भी काफी हद तक स्थितियां बदल रही हैं। पैकेज अब भारत में भी बहुत अच्छा मिल रहा है।

मां मनीषा अग्रवाला कहती हैं वेदांत कभी भी बहुत ज्यादा पढ़ता नहीं था। शार्प था तो कम समय में ही अच्छा कर लेता था। 11वीं में जाकर पढ़ाई को लेकर सीरियस हुआ। बचपन से पायलट बनने का शौक था, लेकिन आईआईटी में कंप्यूटर साइंस लेने पर कंप्यूटर के आगे अब कुछ नहीं दिखता।

आज अजय पिरामल को मानद उपाधि देगा आईआईटी

इंदौर। आईआईटी इंदौर का छठा दीक्षांत समारोह 19 नवंबर को संस्थान में आयोजित किया जाएगा। इसमें पिरामल ग्रुप के चेयरमैन अजय जी. पिरामल को डॉक्टर ऑफ साइंस (डी. एससी) की मानद उपाधि प्रदान की जाएगी। समारोह दोपहर 2.30 बजे कैंपस में आयोजित होगा।

समारोह के मुख्य अतिथि देश के जानेमाने गणितज्ञ पद्मभूषण एमएस रघुनाथन होंगे। अध्यक्षता आईआईटी इंदौर के चेयरमैन प्रोफेसर प्रदीप माथुर करेंगे। समारोह में स्टूडेंट्स को मेडल प्रदान किए जाएंगे।

Nai Dunia (Indore), 19th November 2018, Nai Dunia Live, Page-17